10 वीं पास किसान की आय 80 लाख

अशोक चौधरी

गांव: कालरी, जिला: नागौर (राजस्थान)

मोबाइल-9414433445

फसल के बंपर उत्पादन की स्थिति में अमूमन किसानों को बिक्री की समस्या से जूझना पड़ता है। मजबूरन औने-पौने दाम पर फसल का विपणन करना पड़ता है। कई बार तो हालात किसान को इतना मजबूर कर देते है कि खून-पसीने से तैयार फसल को सड़क अथवा पशुओं को खिलाना पड़ जाता है। लेकिन, ऐसे किसान भी है, जो ऑर्गेनिक फसल को सीमा पार भेजने में कामयाब हुए है। ऐसे ही किसान है नागौर जिले के कालरी गांव के अशोक चौधरी, जो महज 10वीं पास है। लेकिन, ऑर्गेनिक फल, औषधीय, बीजीय मसाला फसलों के जरिये सालाना 70-80 लाख रूपए की आय लेते है। फसल में छिड़के जाने वाले अंधाधुंध कीटनाशक का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष मानव और पर्यावरण स्वास्थ्य पर पड़ रहे विपरीत प्रभाव को जानने के बाद इस किसान ने ऑर्गेनिक खेती की ओर कदम बढ़ाये। परिणाम यह रहा कि इस किसान द्वारा नागौर, जोधपुर जिले में शुरू की गई ऑर्गेनिक खेती की मुहिम से किसान जुड़ते गए, कारवां बढ़ता गया। गौरतलब है कि इस किसान के पास 70 बीघा कृषि भूमि है। लेकिन, 1600 हैक्टेयर क्षेत्र में ऑर्गेनिक फसलों का उत्पादन इस किसान के दम पर किसान कर रहे है। ऑर्गेनिक खेती करने वाले किसान द्वारा तैयार फसल के प्रमाणीकरण से विपणन तक का जिम्मा इस किसान ने संभाला हुआ है।

ऐसे बढ़ा कारवां

ऑर्गेनिक उत्पाद की मांग को जानने के लिए इस किसान ने बंगलुरू, कोलकत्ता, मद्रास, दिल्ली सहित देश के महानगरो के रिटेल बाजार, बडे मॉल और थोक बाजार में मांग का आंकलन किया। इसके बाद बालाजी रिसर्च फाउण्डेशन नाम से संस्था का गठन किया। शुरूआत अपने गांव से की। गांव के आस-पास के किसानों को ऑर्गेनिक मसाले, औषधीय फसल, फल लगाने के लिए प्रोत्साहित किया। परिणाम यह रहा कि इस संस्था के बैनर तले 500 से अधिक किसान ऑर्गेनिक खेती को अपना चुके है। संस्था से जुडे किसान को उत्पाद प्रमाणीकरण और बिक्री के लिए किसी का मुहं नहीं ताकना पड़ता है। गौरतलब है कि यह संस्था किसान को वर्तमान बाजार दर से फसल की 10-20 प्रतिशत अधिक कीमत प्रदान करती है।

जर्मनी-यूएसए पहुंचे उत्पाद

इस किसान द्वारा तैयार उत्पाद को पिछले वर्ष जर्मनी और यूएसए में बड़ा बाजार मिल चुका है। गौरतलब है कि अश्वगंधा, गुग्गल, सहजना, सेना, सनसुखा आदि औषधीय फसल का उत्पादन किसान इस संस्था के लिए कर रहे है। वहीं, मसाला फसल में काला तिल, जीरा, सौफ, कसूरी मेथी और 55 हैक्टेयर क्षेत्र में अनार का उत्पादन हो रहा है। औषधीय और मसाला फसल का निर्यात करने में इस किसान को सफलता मिली है। क्षेत्र में सिंचाई की समस्या के चलते 1 करोड़ लीटर का डेम भी इस किसान ने संस्था से जुडे किसानों के लिए बनवाया है।

साभार हलधर टाइम्स। वर्ष 12। अंक 33। 19-25 जून 2017